Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

देवेन्द्र कुमार यादव
शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र)
टी0डी0पी0जी0 कालेज, जौनपुर
सम्बद्ध– वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)

डॉ0 श्रद्धा सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षक–शिक्षा विभाग
टी0डी0पी0जी0 कालेज,
जौनपुर (उ0प्र0)

सारांश– प्रस्तुत लेख माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन आजमगढ़ जनपद के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक स्तर के 50 विद्यालयों (25 सरकारी एवं 25 गैर सरकारी) विद्यालयों के प्रधानाचार्य से अनुमति प्राप्त कर विद्यालय में शिक्षकों पर डॉ0 प्रमोद कुमार एवं डॉ0 जयश्री ध्यानी द्वारा निर्मित ''जीवन सन्तुष्टि मापनी'' दिया गया। आँकड़ों के विश्लेषण के लिये मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि– सरकारी सहायता प्राप्त शिक्षकों में मानसिक, नौकरी, सामाजिक, वैवाहिक, पारिवारिक एवं सम्पूर्ण जीवन संतुष्टि गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा उच्च पाया गया। सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की जीवन संतुष्टि गैर सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा उच्च पाया गया। एट अल कौर (2008) ने निष्कर्ष रूप में पाया कि सरकारी महाविद्यालय शिक्षक अधिक सन्तुष्ट थे और भी स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षक सरकारी शिक्षकों की अपेक्षा ज्यादा कुंठाग्रस्त थे। श्री देवी (2011) ने नष्कर्ष रूप में पाया कि भेद की दृष्टि से और लम्बे समय से कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाओं के कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं था। सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की अपेक्षा सरकारी संस्थानों में कार्यरत शिक्षक अपने व्यवसाय से अधिक सन्तुष्ट थे।

की–वर्डः– माध्यमिक स्तर, सरकारी, गैर सरकारी, शिक्षक, शैक्षिक, मानसिक, नौकरी, सामाजिक, वैवाहिक, पारिवारिक, जीवन संतुष्टि, अन्तर।

प्रस्तावना– मानव समाज में शिक्षक का स्थान अत्यंत उच्च है। किसी भी राष्ट्र के उत्थान एवं पतन में शिक्षक का महत्वपूर्ण योगदान होता है, क्योंकि शिक्षक उन बच्चों को शिक्षण देता है, जो भावी नागरिक होते हैं। सम्पूर्ण समाज की उन्नति के लिए शिक्षकगण आदिकाल से ही प्रयत्न करते आ रहे हैं। जीवन के लक्ष्यों एवं आदर्शों की प्राप्ति में उनका नेतृत्व मनुष्य को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाता रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक सर्वोच्च स्थान पर है। पाठशाला के छोटे–छोटे कार्यों से लेकर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का सम्पूर्ण संचालन शिक्षक के हाथ में रहता है। अर्थात् राष्ट्र का विकास एवं शिक्षा दोनों को शिक्षक के गुण प्रभावित करते हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही भारत सरकार को यह विश्वास हो गया है कि शिक्षा ही राष्ट्रीय प्रगति एवं मानव कल्याण का आधार है राष्ट्र एवं समाज का हित जितना शिक्षा से हो सकता है उतना किसी अन्य साधन से नहीं हो सकता है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने देश की संरचना के प्रत्येक स्तर पर शिक्षा के विकास के लिए प्रयास प्रारम्भ कर दिया।

जीवन संतुष्टि बहुत ही व्यापक शब्द है, जिसके कोई एक आयाम नहीं हैं। इसमें शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य प्रमुख होता है, जिसके लिए परिवार, शिक्षा, रोजगार, धन, धार्मिक विश्वास, वित्त व पर्यावरण से लेकर अन्य पक्ष भी समाहित है। चूँकि अध्यापक भी समाज का बौद्धिक नागरिक है, जिसके पास अपना शरीर, मन व मस्तिष्क के साथ–साथ आत्मिक सुख जुड़ा होता है और अपने शिक्षण व्यवसाय में उन्हीं को शामिल करके भावी पीढ़ी अर्थात् विद्यार्थियों में सृजन करता है परन्तु साथ ही साथ उसे अपने परिवार व समाज के अंश को भी अपने व्यावसायिक भागीदारी से ही संतुष्ट करना है अर्थात् व्यवसाय तथा पारिवारिक व सामाजिक जीवन के मध्य समायोजन वह तृप्त बिन्दु है, जहां से जीवन भविष्य की तरफ स्वास्थ्य प्रवाह में चलता है, उसी को प्रस्तुत अध्ययन में जीवन संतुष्टि कहा गया है जो कार्य संतुष्टि से जुड़ा होता है।

वर्तमान समय में शिक्षित बेरोजगारी बढ़ने तथा अन्य विकल्प न मिलने पर विवश हो कर व्यक्ति अध्यापन कार्य करने लगे है। विवशतावश शिक्षक बन जाने पर भी उनके सामने कुछ ऐसे कारक उत्पन्न हो जाते है, जिससे उनकी शिक्षण प्रभावशीलता प्रभावित होती है। उनकी योग्यता क्षमतानुसार उचित पद, सेवा सुरक्षा, वेतन, कार्य दशाएं प्राप्त साधन सुविधाएं, वातावरण, संगठन का आभाव, सहयोगियों, प्रधानाचार्य, प्रबन्धकों साथ उचित मानवीय सम्बन्धों के अभाव आदि के कारण शिक्षक कुंठित रहते है। परिणाम स्वरूप वह अपने शिक्षण कार्य साथ चाह कर भी न्याय नहीं कर पाते है। अतः उचित पर्यावरण एवं सहयोगात्मक व्यवहार न मिलने से शिक्षकों में अनेक मनोवैज्ञानिक समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षक प्रभावपूर्ण शिक्षण करने में संक्षम नहीं हो पाते है। वे अपने कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों का पालन उचित प्रकार से नहीं कर सकेंगे साथ शिक्षक विद्यार्थियों को उनके परिवार, समाज व देश के प्रति दायित्वों की जानकारी प्रदान करने में सक्षम नहीं हो सकेंगे, जिसका प्रभाव पूरे शिक्षण एवं राष्ट्र पर पड़ता है। इसलिए एक कुशल एवं प्रभावपूर्ण शिक्षक के लिए अपने व्यवसाय के प्रति सन्तुष्टि का होना अति आवश्यक है।

जहां तक अध्यापकों की जीवन संतुष्टि के अर्थ का प्रश्न है, यह लिखना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि अध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि पर पूरे विश्व का भविष्य निर्भर है। अध्यापक हो अध्यापिका जीवन संतुष्टि से मिलने वाले संतोष पर ही भावी पीढ़ी के सुखद भविष्य की कामना की जा सकती है। यदि शिक्ष अपने जीवन में असंतुष्ट होगा तो अपने दायित्वो को वह भली प्रकार से नहीं निभा पायेंगा। इसका प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ेगा और इसके उपरान्त समाज का पतन अवश्यम्भावी है।

समस्या कथन– माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य– अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्माण किया गया है–

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

   1.1 माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि की विमा मानसिक सम्बन्धी संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.2 माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि की विमा नौकरी सम्बन्धी संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.3 माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि की विमा सामाजिक सम्बन्धी संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.4 माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि की विमा वैवाहिक सम्बन्धी संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.5 माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि की विमा परिवार सम्बन्धी संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ– उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.1 माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि की विमा मानसिक सम्बन्धी संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.2 माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि की विमा नौकरी सम्बन्धी संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.3 माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि की विमा सामाजिक सम्बन्धी संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.4 माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि की विमा वैवाहिक सम्बन्धी संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.5 माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि की विमा परिवार सम्बन्धी संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध–प्रविधि– अध्ययन आजमगढ़ जनपद के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक स्तर के 50 विद्यालयों (25 सरकारी एवं 25 गैर सरकारी) विद्यालयों के प्रधानाचार्य से अनुमति प्राप्त कर विद्यालय में शिक्षकों पर डॉ0 प्रमोद कुमार एवं डॉ0 जयश्री ध्यानी द्वारा निर्मित ''जीवन सन्तुष्टि मापनी'' दिया गया। आँकड़ों के विश्लेषण के लिये मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण–

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि की विमा मानसिक सम्बन्धी संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन–

सारणी सं0 1

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक सम्बन्धी सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र0 सं0	संस्था	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	मध्यमान का अन्तर $D=(M_1 \sim M_2)$	प्रमाणिक त्रुटि σ_D	टी–मान (t)	सारणी मान
1.	सरकारी	250	31.18	3.98	3.11	0.33	9.42*	1.96 df=498
2.	गैर सरकारी	250	28.07	3.39				

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

उपर्युक्त सारणी सं0 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक सम्बन्धी सन्तुष्टि का मध्यमान क्रमशः 31.18 एवं 28.07 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.98 एवं 3.39 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 9.42 है। मुक्तांश 498 तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.96 है अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणी मान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राकल्पित किया गया था कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक सम्बन्धी सन्तुष्टि में अन्तर है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक सम्बन्धी सन्तुष्टि में अन्तर नही है, निरस्त की जाती है तथा परिणामतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक सम्बन्धी सन्तुष्टि गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सन्तुष्ट है अर्थात् दोनों में सार्थक अन्तर पाया गया।

आरेख सं0 1

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक सम्बन्धी सन्तुष्टि के मध्यमानों का आरेखीय चित्र

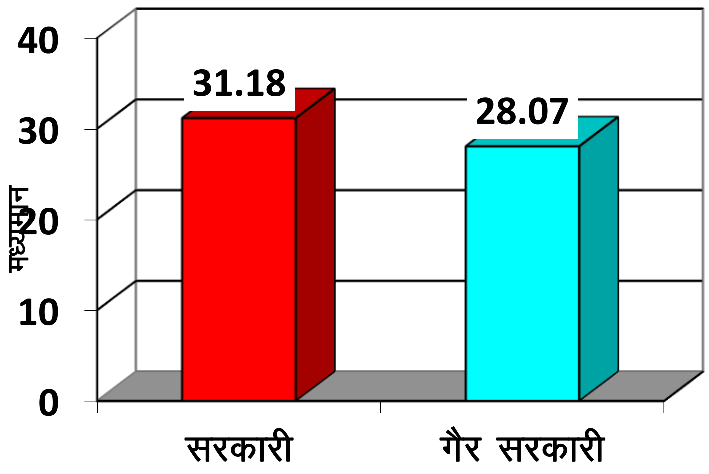

2. **माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि की विमा नौकरी सम्बन्धी संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन–**

सारणी सं0 2

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के नौकरी सम्बन्धी सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र0 सं0	संस्था	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	मध्यमान का अन्तर $D=(M_1 \sim M_2)$	प्रमाणिक त्रुटि σ_D	टी–मान (t)	सारणी मान
1.	सरकारी	250	24.79	3.41	2.89	0.27	10.70*	1.96
2.	गैर सरकारी	250	21.90	2.62				df=498

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

उपर्युक्त सारणी सं0 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के नौकरी सम्बन्धी सन्तुष्टि का मध्यमान क्रमशः 24.79 एवं 21.90 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.41 एवं 2.62 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 10.70 है। मुक्तांश 498 तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.96 है अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणी मान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राकल्पित किया गया था कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के नौकरी सम्बन्धी सन्तुष्टि में अन्तर है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के नौकरी सम्बन्धी सन्तुष्टि में अन्तर नही है, निरस्त की जाती है तथा परिणामतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के नौकरी सम्बन्धी सन्तुष्टि गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सन्तुष्ट है अर्थात् दोनों में सार्थक अन्तर पाया गया।

आरेख सं0 2

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के नौकरी सम्बन्धी सन्तुष्टि के मध्यमानों का आरेखीय चित्र

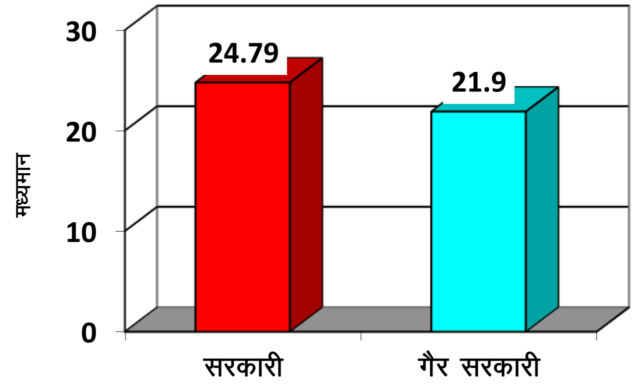

3. **माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि की विमा सामाजिक सम्बन्धी संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन–**

सारणी सं0 3

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के सामाजिक सम्बन्धी सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र0 सं0	संस्था	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	मध्यमान का अन्तर $D=(M_1 \sim M_2)$	प्रमाणिक त्रुटि σ_D	टी–मान (t)	सारणी मान
1.	सरकारी	250	26.60	3.51	0.84	0.29	2.89*	1.96
2.	गैर सरकारी	250	27.44	2.92				df=498

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

उपर्युक्त सारणी सं0 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के सामाजिक सम्बन्धी सन्तुष्टि का मध्यमान क्रमशः 26.60 एवं 27.44 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.51 एवं 2.92 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 2.89 है। मुक्तांश 498 तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.96 है अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणी मान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राकल्पित किया गया था कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के सामाजिक सम्बन्धी सन्तुष्टि में अन्तर है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के सामाजिक सम्बन्धी सन्तुष्टि में अन्तर नही है, निरस्त की जाती है तथा परिणामतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के सामाजिक सम्बन्धी सन्तुष्टि सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सन्तुष्ट है अर्थात् दोनों में सार्थक अन्तर पाया गया।

आरेख सं0 3

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के सामाजिक सम्बन्धी सन्तुष्टि के मध्यमानों का आरेखीय चित्र

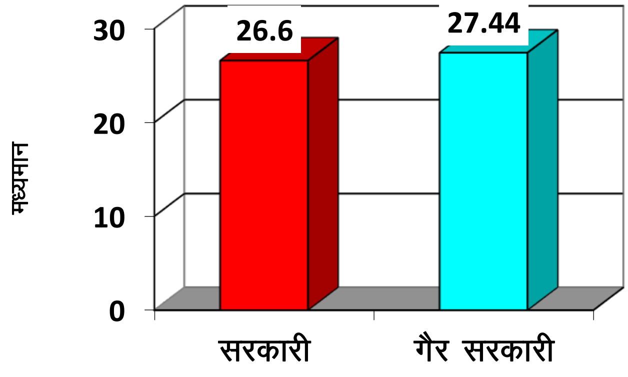

4. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि की विमा वैवाहिक सम्बन्धी संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन–

सारणी सं0 4

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के वैवाहिक सम्बन्धी सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र0 सं0	संस्था	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	मध्यमान का अन्तर $D=(M_1 \sim M_2)$	प्रमाणिक त्रुटि σ_D	टी–मान (t)	सारणी मान
1.	सरकारी	250	24.26	3.28	2.25	0.26	8.65*	1.96
2.	गैर सरकारी	250	22.01	2.55				df=498

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

उपर्युक्त सारणी सं0 4 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के वैवाहिक सम्बन्धी सन्तुष्टि का मध्यमान क्रमशः 24.26 एवं 22.01 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.28 एवं 2.55 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 8.65 है। मुक्तांश 498 तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.96 है अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणी मान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राकल्पित किया गया था कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के वैवाहिक सम्बन्धी सन्तुष्टि में अन्तर है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के वैवाहिक सम्बन्धी सन्तुष्टि में अन्तर नही है, निरस्त की जाती है तथा परिणामतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के वैवाहिक सम्बन्धी सन्तुष्टि गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सन्तुष्ट है अर्थात् दोनों में सार्थक अन्तर पाया गया।

आरेख सं0 4

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के वैवाहिक सम्बन्धी सन्तुष्टि के मध्यमानों का आरेखीय चित्र

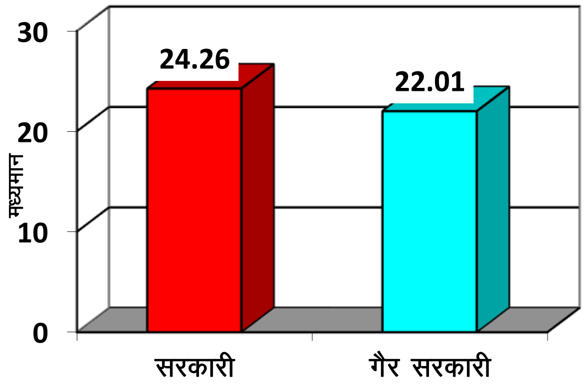

5. **माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि की विमा परिवार सम्बन्धी संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन–**

सारणी सं0 5

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के परिवार सम्बन्धी सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र0 सं0	संस्था	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	मध्यमान का अन्तर $D=(M_1 \sim M_2)$	प्रमाणिक त्रुटि σ_D	टी–मान (t)	सारणी मान
1.	सरकारी	250	12.93	2.56	0.58	0.21	2.76*	1.96
2.	गैर सरकारी	250	12.35	2.16				df=498

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

उपर्युक्त सारणी सं0 5 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के परिवार सम्बन्धी सन्तुष्टि का मध्यमान क्रमशः 12.93 एवं 12.35 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.56 एवं 2.16 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 2.76 है। मुक्तांश 498 तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.96 है अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणी मान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राकल्पित किया गया था कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के परिवार सम्बन्धी सन्तुष्टि में अन्तर है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के परिवार सम्बन्धी सन्तुष्टि में अन्तर नही है, निरस्त की जाती है तथा परिणामतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के परिवार सम्बन्धी सन्तुष्टि गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सन्तुष्ट है अर्थात् दोनों में सार्थक अन्तर पाया गया।

आरेख सं0 5

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के परिवार सम्बन्धी सन्तुष्टि के मध्यमानों का आरेखीय चित्र

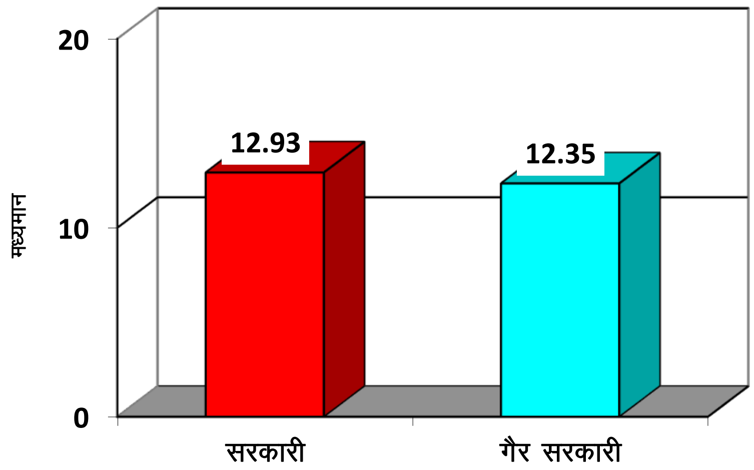

6. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि की विमा मानसिक सम्बन्धी संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन–

सारणी सं0 6

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र0 सं0	संस्था	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	मध्यमान का अन्तर $D=(M_1 \sim M_2)$	प्रमाणिक त्रुटि σ_D	टी–मान (t)	सारणी मान
1.	सरकारी	250	119.77	10.46	8.00	0.82	9.76*	1.96
2.	गैर सरकारी	250	111.77	7.64				df=498

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

उपर्युक्त सारणी सं0 6 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि का मध्यमान क्रमशः 119.77 एवं 111.77 तथा मानक विचलन क्रमशः 10.46 एवं 7.64 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 9.76 है। मुक्तांश 498 तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.96 है अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणी मान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राकल्पित किया गया था कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि में अन्तर है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर

स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि में अन्तर नही है, निरस्त की जाती है तथा परिणामतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सन्तुष्ट है अर्थात् दोनों में सार्थक अन्तर पाया गया।

आरेख सं0 6

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सन्तुष्टि के मध्यमानों का आरेखीय चित्र

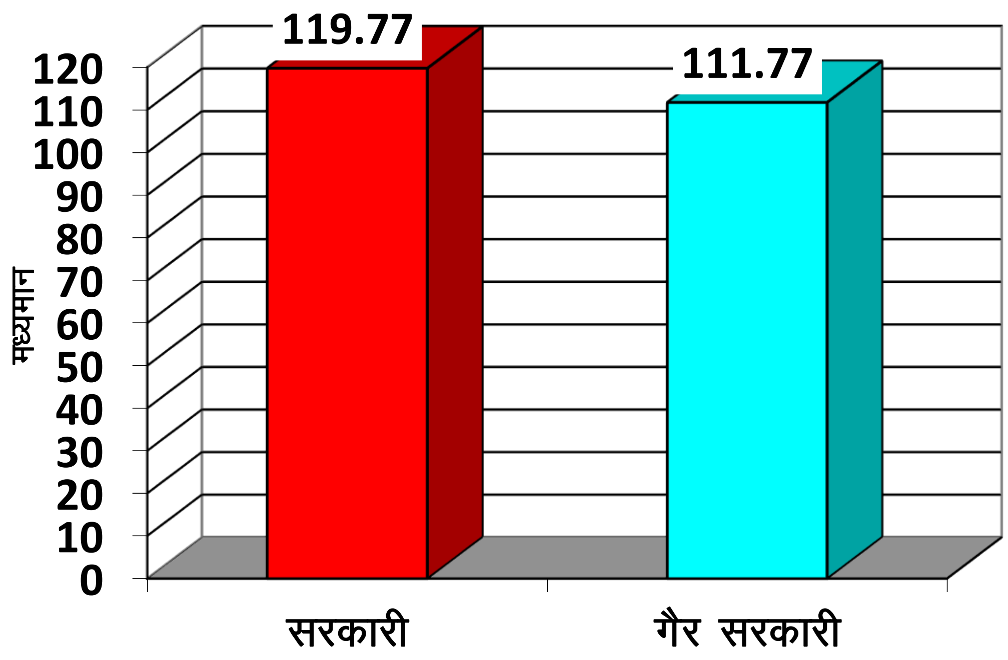

निष्कर्ष– अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

- माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक सम्बन्धी सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर है।
- माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के नौकरी सम्बन्धी सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर है।
- माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के सामाजिक सम्बन्धी सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर है।
- माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के वैवाहिक सम्बन्धी सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर है।
- माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के परिवार सम्बन्धी सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर है।

- माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों के जीवन सम्बन्धी सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रामाकृष्णनैयाह, डी0 (1989), जॉब सटिस्फैक्सन ऑफ कालेज टीचर्स, पी–एच.डी. शिक्षाशास्त्र, श्री वेंकेटेश्वर विश्वविद्यालय।
2. रामनवास (2015)ः लाइफ सैटिसफैक्शन एमंगसरल एण्ड अवरन टीचर्स ऑफ पंजाब इन रिलेशन टू देयर टीचिंग एट्टीच्यूड, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव एण्ड अप्लायड रिसर्च (2015) वाल्यूम 3 इसू 8–34–अ.
3. राज, तिलक एवं ललिता (2013). जॉब सेटिसफेक्शन एमंग टीचर्स ऑफ प्राइवेट एण्ड गर्वनमेन्ट स्कूल : ए कम्प्रेटिव एनालिस, इन्ट्रा ओनल जर्नस ऑफ सोशल साइंस एण्ड इण्टरडिसिपिलिनरी रिसर्च, वॉल्यूम–2(9), पृ0 151–158।
4. राजू, टी.जे.एम.एस. (2011). पर्सनालिटी एडजेस्टमेन्ट एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन एमंग द लेक्चरर्स वर्किंग इन जूनियर कॉलेज, रिसर्च पेपर, आई–मैनेजर्स जनरल ऑफ एजूकेशनल साइकोलॉजी, वॉल्यूम–5, नं0 2, पृ0 45–49।
5. शेरगिल, सबरजीत सिंह एवं लाल, रोशन (2010), ए कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ जॉब सेटिसफेक्शन एण्ड एटीट्यूड टूवर्ड एजूकेशन एमंग मेल एण्ड फीमेल टीचर्स ऑफ डिग्री कालेज, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ मार्केटिंग, फाइनेन्स सर्विसेज एण्ड मैनेजमेन्ट रिसर्च, वॉल्यूम–1, नं0 1, पृ0 57–64।
6. शर्मा, ब्रह्मदत्त (2017). प्रारम्भिक शिक्षा के भावी शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति, वचनबद्धता तथा जीवन सन्तुष्टि का अध्ययन, इण्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ कॉमर्स, आर्ट्स एण्ड साइंस, वॉ0 8, इश्शू–12, पृ0 271–287